

## पाठ 39

1. इस्राएलियों का नया अगुवा कौन था जिसे परमेश्वर ने मूसा के स्थान पर चुनने के लिए चुना था?

-यहोशू।

2. क्या परमेश्वर ने अपना वादा पूरा किया और इब्राहीम के वंशजों को कनान देश दिया?

-हां।

3. यहोशू के मरने के बाद इस्राएलियों ने क्या किया?

-यहोशू के मरने के बाद इस्राएलियों ने परमेश्वर को ठुकरा दिया और वे बहुत दुष्ट हो गए।

-यहोशू की मृत्यु के बाद, इस्राएलियों ने परमेश्वर के बजाय छवियों को बनाया और छवियों की पूजा की।

4. किसने इस्राएलियों को धोखा दिया कि उन्होंने परमेश्वर को अस्वीकार कर दिया और मूर्तियों की पूजा की?

-शैतान।

5. अगर हम परमेश्वर के अलावा किसी और की पूजा करते हैं, तो हम किसकी पूजा कर रहे हैं?

-शैतान की।

6. शैतान लोगों को मूर्तियों की पूजा करने के लिए क्यों ले जाता है?

-क्योंकि शैतान परमेश्वर से घृणा करता है, और नहीं चाहता कि कोई परमेश्वर की आराधना करे।

-क्योंकि शैतान सभी लोगों से घृणा करता है, और नहीं चाहता कि कोई भी परमेश्वर द्वारा बचाया जाए।

7. छवियों की पूजा करने के लिए परमेश्वर ने इस्राएलियों को कैसे दण्ड दिया?

-परमेश्वर ने इस्राएलियों के शत्रुओं को भेजा कि वे आकर इस्राएलियों की सारी फसल नष्ट कर दें।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों के शत्रुओं को उनके सब पशुओं को चुरा लेने के लिये भेजा।

-परमेश्वर ने इस्राएलियों के शत्रुओं को भेजा कि वे आकर इस्राएलियों को अपना दास बना लें।

8. जब इस्राएलियों ने अपने पापों को स्वीकार किया, और परमेश्वर से उन्हें बचाने के लिए कहा, तो परमेश्वर ने क्या किया?

-जब इस्राएलियों ने अपने पापों को स्वीकार किया, और परमेश्वर से उन्हें बचाने के लिए कहा, तो परमेश्वर इस्राएलियों में से पुरुषों और महिलाओं को चुनेगा जो इस्राएलियों को उनके शत्रुओं को हराने के लिए नेतृत्व करेंगे।

9. वे पुरुष और महिलाएं क्या थे जिन्हें परमेश्वर ने इस्राएलियों को उनके शत्रुओं को हराने के लिए नेतृत्व करने के लिए चुना था?

-न्यायाधीशों।

10. परमेश्वर ने अब भी इस्राएलियों से प्रेम और रक्षा क्यों की?

-क्योंकि परमेश्वर ने वादा किया था कि अब्राहम, इसहाक और याकूब के कई वंशज होंगे जो एक महान लोग बनेंगे।

-क्योंकि परमेश्वर ने इस्राएलियों के वंशजों के द्वारा उद्धारकर्ता को भेजने का वचन दिया था।

-क्योंकि परमेश्वर ने इस्राएलियों के वंशजों के माध्यम से अपना संदेश, बाइबल भेजने का वादा किया था।

11. इस्राएलियों का अंतिम न्यायी कौन था?

-शमूएल।

12. शमूएल के मरने से पहले, इस्राएलियों ने शमूएल से क्या करने को कहा?

-इस्राएलियों ने शमूएल से उनकी अगुवाई के लिए एक राजा चुनने को कहा।

13. इसने शमूएल को दुखी क्यों किया?

-शमूएल दुखी था क्योंकि इस्राएली अपने राजा के रूप में परमेश्वर को अस्वीकार कर रहे थे।

-परमेश्वर ने शाऊल को इस्राएलियों का पहला राजा बनने के लिए चुना।

-क्योंकि परमेश्वर ने शाऊल को चुना, परमेश्वर चाहता था कि शाऊल उसकी आज्ञा माने, परन्तु शाऊल ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया।

-इसलिए, शमूएल ने शाऊल से कहा कि परमेश्वर ने इस्राएलियों का राजा बनने के लिए किसी अन्य व्यक्ति को चुना है।

आइए पढ़ें 1 शमूएल 13:13-14

13- “तू ने मूर्खता का काम किया,” शमूएल ने शाऊल से कहा। “तू ने जो आज्ञा तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे दी है उसका पालन नहीं किया; यदि तू होता, तो वह तेरे राज्य को इस्राएल पर सर्वदा के लिये स्थिर करता।

14-परन्तु अब तेरा राज्य स्थिर न रहेगा; यहोवा ने आपके मन के अनुसार मनुष्य को ढूंढा, और आपकी प्रजा का प्रधान ठहराया है, क्योंकि तू ने यहोवा की आज्ञा का पालन नहीं किया है।"

-जब शाऊल ने परमेश्वर की अवज्ञा की, तो परमेश्वर ने इस्राएल के अगले राजा के रूप में किसे चुना?

-दाऊद।

-परमेश्वर ने दाऊद को इस्राएलियों का दूसरा राजा बनने के लिए चुना।

आइए पढ़ें 1 शमूएल 16:1 और 13

1 यहोवा ने शमूएल से कहा, तू कब तक शाऊल के लिथे विलाप करता रहेगा, क्योंकि मैं ने उसको इस्राएल का राजा जानकर तुच्छ जाना है? आपके सींग में तेल भरकर मार्ग में हो; मैं तुम्हें बेतलेहेम के यिशै के पास भेज रहा हूँ। मैंने उसके पुत्रों में से एक को राजा होने के लिए चुना है।"

13 तब शमूएल ने तेल का सींग लेकर आपके भाइयोंके साम्हने दाऊद का अभिषेक किया, और उसी दिन से यहोवा का आत्मा दाऊद पर प्रबल होकर उतरा।

-शाऊल के मरने के बाद सब इस्राएली दाऊद के पास उसे राजा बनाने के लिथे आए।

आइए पढ़ें 2 शमूएल 5:1-4

1-इस्राएल के सब गोत्र दाऊद के पास हेब्रोन में आकर कहने लगे, “हम तो तेरे ही मांस और लोहू हैं।

2-अतीत में, जब शाऊल हम पर राजा था, तब तू ही वह था जिसने इस्राएल को उनके सैन्य अभियानों में नेतृत्व किया था। और यहोवा ने तुझ से कहा, तू मेरी प्रजा इस्राएल की रखवाली करेगा, और तू उनका प्रधान होगा।

3 जब इस्राएल के सब पुरनिये हेब्रोन में राजा दाऊद के पास आए, तब राजा ने उनके साथ यहोवा के साम्हने हेब्रोन में सन्धि की, और उन्होंने इस्राएल के ऊपर दाऊद का अभिषेक किया।

4-जब दाऊद राजा हुआ, तब वह तीस वर्ष का या, और चालीस वर्ष तक राज्य करता रहा।

-शाऊल और दाऊद किस प्रकार भिन्न थे?

-शाऊल को विश्वास नहीं था कि वह परमेश्वर से अलग किए गए पाप में पैदा हुआ था।

-लेकिन दाऊद जानता था कि वह परमेश्वर से अलग पाप में पैदा हुआ था।

-शाऊल यह नहीं मानता था कि परमेश्वर सभी पापों को मृत्यु के द्वारा दंड देता है।

-लेकिन दाऊद जानता था कि परमेश्वर सभी पापों को मौत की सजा देते हैं।

-शाऊल को विश्वास नहीं था कि केवल ईश्वर ही उसे बचा सकता है।

-लेकिन दाऊद जानता था कि केवल परमेश्वर ही उसे बचा सकता है।

-शाऊल ने उद्धारकर्ता को भेजने के परमेश्वर के वादे पर विश्वास नहीं किया।

-लेकिन दाऊद जानता था कि शैतान और मौत से बचाने के लिए परमेश्वर उद्धारकर्ता को भेजेगा।

-क्योंकि दाऊद को ईश्वर में विश्वास था, उसने ईश्वर की पूजा के कई गीत लिखे।

-दाऊद ने परमेश्वर की पूजा के कई गीत लिखे जो अब परमेश्वर की किताब, बाइबिल में हैं।

-क्योंकि दाऊद इस्राएलियों का राजा था, उसके पास बहुत धन था।

-क्योंकि दाऊद इस्राएलियों का राजा था, उस ने लकड़ी, पत्थर, सोने और चान्दी का एक बड़ा भवन बनवाया।

-एक दिन दाऊद अपने घर और परमेश्वर के तम्बू के बारे में सोचने लगा।

आइए पढ़ें 2 शमूएल 7:1-3

1-जब राजा अपने महल में बस गया, और यहोवा ने उसको उसके चारोंओर के सब शत्रुओं से विश्राम दिया,

2-उस ने नातान भविष्यद्वक्ता से कहा, मैं तो यहां देवदार के भवन में रहता हूं, और परमेश्वर का सन्दूक तम्बू में रहता है।

3-नातान ने राजा को उत्तर दिया, कि जो कुछ तेरा मन हो, वही कर, क्योंकि यहोवा तेरे संग है।

-जब दाऊद ने अपना घर बना लिया, तो वह क्या करना चाहता था?

-दाऊद परमेश्वर के लिए एक घर बनाना चाहता था।

-क्या परमेश्वर को रहने के लिए घर की जरूरत है?

-नहीं।



-परमेश्वर एक ही समय में हर जगह हैं, और रहने के लिए घर की जरूरत नहीं है।

-भले ही परमेश्वर को रहने के लिए घर की आवश्यकता न हो, परमेश्वर प्रसन्न था कि दाऊद ने उसके बारे में सोचा।

-तब परमेश्वर ने दाऊद से क्या कहा?

आइए पढ़ें 2 शमूएल 7:12-13

12-यहोवा ने कहा, जब तेरे दिन पूरे हो जाएंगे, और तू अपने पुरखाओं के संग विश्राम करेगा, तब मैं तेरे वंश में से तेरे स्थान पर तेरे वंश को खड़ा करूंगा, जो तेरी ही देह से निकलेगा, और मैं उसके राज्य को स्थिर करूंगा।

13- वही मेरे नाम का भवन बनाएगा।”

-यद्यपि परमेश्वर प्रसन्न था कि दाऊद ने उसके बारे में सोचा, परमेश्वर ने कहा कि दाऊद परमेश्वर के लिए एक घर बनाने वाला नहीं होगा।

-परमेश्वर के लिए घर बनाने वाला कौन था?

-दाऊद का बेटा, सुलैमान।

-क्योंकि दाऊद ने परमेश्वर में विश्वास किया, परमेश्वर ने दाऊद से एक प्रतिज्ञा की।

-यहाँ वह है जो परमेश्वर ने दाऊद से वादा किया था:

आइए पढ़ें 2 शमूएल 7:16

16-यहोवा ने दाऊद से कहा, तेरा घराना और तेरा राज्य मेरे साम्हने सदा बना रहेगा; तेरा सिंहासन सदा स्थिर रहेगा।”

-यह महान प्रतिज्ञा क्या थी जो परमेश्वर ने दाऊद से की थी?

-परमेश्वर ने वादा किया कि वह दाऊद के वंशजों के माध्यम से उद्धारकर्ता को भेजेगा।

-यह प्रतिज्ञा जो परमेश्वर ने दाऊद से की थी वही प्रतिज्ञा है जो परमेश्वर ने अब्राहम, इसहाक और याकूब से की थी।

-परमेश्वर उद्धारकर्ता को भेजेगा जो हमेशा और हमेशा के लिए राजा होगा।

-क्या परमेश्वर उद्धारकर्ता को भेजने के अपने वादे को भूल गया?

-नहीं।

-परमेश्वर ने हमें पाप, मृत्यु और शैतान से बचाने के लिए उद्धारकर्ता को भेजने के अपने वादे को हमेशा याद रखा।

-दाऊद के मरने से पहले उसने परमेश्वर के लिए एक भवन बनाने के लिए कई तैयारियां कीं।

-तब दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान को परमेश्वर का भवन बनाने का काम दिया।

आइए पढ़ें 1 इतिहास 22:5-6

5-दाऊद ने कहा, मेरा पुत्र सुलैमान जवान और अनुभवहीन है, और यहोवा के लिथे जो भवन बनाया जाना है वह सब जातियोंके साम्हने बड़े प्रताप, और कीर्ति और वैभव का हो। इसलिए मैं इसकी तैयारी करूंगा।" इसलिये दाऊद ने अपनी मृत्यु से पहिले व्यापक तैयारी की।

6-तब उस ने अपने पुत्र सुलैमान को बुलवाकर आज्ञा दी, कि वह इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिथे एक भवन बनाए।

-दाऊद के मरने से पहले, उसने अपने बेटे सुलैमान से कहा कि वह परमेश्वर के लिए एक भवन बनाए।

-इसके बाद दाऊद मर गया, और उसका पुत्र सुलैमान इस्राएलियों का राजा बना।

आइए पढ़ें 1 इतिहास 29:26-28

26-यिथै का पुत्र दाऊद सारे इस्राएल का राजा था।

27-उसने इस्राएल पर चालीस वर्ष शासन किया—सात हेब्रोन में और तैंतीस यरूशलेम में।

28-लंबे जीवन, धन और सम्मान का आनंद लेने के बाद, वह एक अच्छे बुढ़ापे में मर गया। उसका पुत्र सुलैमान उसके स्थान पर राजा हुआ।

-सुलैमान के इस्राएलियों का राजा बनने के बाद, उसने क्या किया?

आइए 2 इतिहास 2:1 पढ़ें

1-सुलैमान ने यहोवा के नाम का एक मन्दिर बनाने की आज्ञा दी।

-जैसा उसके पिता राजा दाऊद ने उस से कहा था, सुलैमान ने परमेश्वर के लिथे एक भवन बनवाया।

-सुलैमान ने परमेश्वर के लिए जो भवन बनवाया उसका नाम मंदिर पड़ा।

-सुलैमान ने यरूशलेम शहर में मंदिर बनवाया।

-यरूशलेम शहर कनान का एक बड़ा शहर था जहाँ बहुत से इस्राएली रहते थे।

-शहर को इस्राएलियों के शत्रुओं से बचाने के लिए यरूशलेम शहर को एक बड़ी पत्थर की दीवार से घेर लिया गया।

-सुलैमान ने परमेश्वर के लिए जो मंदिर बनाया वह उस तम्बू के समान था जिसे इस्राएलियों ने जंगल में परमेश्वर के लिए बनाया था।

-जो मन्दिर सुलैमान ने परमेश्वर के लिये बनाया, वह उस तम्बू के समान कैसा था, जिसे इस्राएलियों ने परमेश्वर के लिये जंगल में बनाया था?

-परमेश्वर के तंबू में पहला कमरा था जिसे पवित्र कक्ष कहा जाता था।

-मंदिर में पहला कमरा भी था जिसे पवित्र कक्ष कहा जाता था।

-परमेश्वर के तम्बू में एक दूसरा कमरा था जिसे परम पवित्र कक्ष कहा जाता था।

-मंदिर में एक दूसरा कमरा भी था जिसे परम पवित्र कक्ष कहा जाता था।

-परमेश्वर के तम्बू में एक परदा था जो दोनों कमरों को अलग करता था।

-मंदिर में एक पर्दा भी था जो दोनों कमरों को अलग करता था।

-क्योंकि परमेश्वर पवित्र है और सभी पापों से घृणा करता है, मुख्य पुजारी कितनी बार परम पवित्र कक्ष में प्रवेश करने में सक्षम था?

-साल में सिर्फ एक बार।

-क्योंकि परमेश्वर पवित्र है और सभी पापों से घृणा करता है, महायाजक ने परमपवित्र कक्ष में क्या किया?

-उसने वाचा के सन्दूक पर पशुओं का खून छिड़का।

-परमेश्वर क्या करेगा जब उसने उस लहू को देखा जिसे मुख्य याजक ने वाचा के सन्दूक पर छिड़का था?

-जब तक पाप का बेहतर भुगतान नहीं किया जाता, तब तक परमेश्वर लोगों के पापों की सजा को एक और वर्ष के लिए रोक देगा।

-क्या जानवरों का खून लोगों के पापों का भुगतान करने में सक्षम था?

-नहीं।

-जानवरों का खून लोगों के पापों का भुगतान क्यों नहीं कर पा रहा था?

-क्योंकि पाप की कीमत पापी की मृत्यु से चुकानी पड़ती है।

-राजा सुलैमान के मरने के बाद इस्राएलियों का क्या हुआ?

-इस्राएली इस बात पर सहमत नहीं हो सके कि अगला राजा कौन होगा।

-इस कारण इस्राएलियों के बारह गोत्र अलग हो गए और दो लोग हो गए।

-उत्तर में दस गोत्र दक्षिण में दो गोत्रों से अलग हो गए।

-उत्तर के दस गोत्रों को क्या कहा जाता था?

-इजराइल।

-दक्षिण की दो जनजातियों को क्या कहा जाता था?

-यहूदा।

-बहुत से राजाओं ने इस्राएल पर शासन किया, और कई राजाओं ने यहूदा पर शासन किया।

-अधिकांश राजा ईश्वर को नहीं मानते थे।

-केवल कुछ ही राजा ईश्वर में विश्वास करते थे।